आवश्यक दस्तावेज

1. मृत्यु का कारण प्राकृतिक (Natural) होना अनिवार्य है जिसे पंजीकृत चिकित्सक द्वारा प्रमाणित किया गया हो।
2. मृतक का आधार कार्ड
3. मृतक का पासपोर्ट साईज़ फोटो
4. मृत्यु प्रमाण पत्र (शासकीय/पंजीकृत चिकित्सक द्वारा जारी)
5. नेगेटिव आर.टी.पी.सी.आर. रिपोर्ट ★
6. मृत्यु मेडिको लीगल (एक्सीडेन्ट, आत्महत्या, पॉईजनिंग) न हो।
7. परिवार के सदस्य का आधार कार्ड
8. परिवार के सदस्य का पासपोर्ट साईज फोटा

★ कोरोना महामारी के दृष्टिगत, सरकार के निर्देशानुसार।

सम्पर्क :

दूरभाष नम्बर – 07672–299660
मेल आई–डी **gmcsatna150@gmail.com**

शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय सतना

देहदान - महादान

डॉ0 अंकित जैन
विभागाध्यक्ष एवं सह–प्राध्यापक
शरीर रचना विभाग
शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय
सतना (म0प्र0)

डॉ0 शशिधर प्रसाद गर्ग
अधिष्ठाता
शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय
सतना (म0प्र0)

देहदान क्यो आवश्यक है

भारत वर्ष में देहदान की प्रथा कोई नई नही है, यह सदियों से चली आ रही है। संसार में समस्त प्राणी अपने स्वयं के लिये जीते है लेकिन कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है जो परोपकार के लिये स्वयं के हितों का बलिदान कर देते है। हमारें देश मे ऐसे अनेक पुरूष और महिलाऐं हुए है जिन्होनें दूसरों की सहायता के लिए स्वयं कष्ट सहे है।

ऐसे ही महान परोपकारी महापुरूषों मे महर्षि दधिची का नाम आदर के साथ लिया जाता है। जब देवताओं और असुरों में युद्ध छिड़ा तों देवता हारनें वाले थे। सभी देवतागण मिलकर अपने राजा इन्द्र देव के पास गए और बोले राजन हमें युद्ध में असफलता के आसार दिखाई पढते है, क्यो ना इस विषय में ब्रम्हाजी से कोई उपाय पूछें। इन्द्रदेव एवं अन्य देवतागण ब्रम्हाजी के पास गए। ब्रम्हाजी बोले हे देवराज त्याग मे इतनी शक्ति होती है कि उसके बल पर किसी भी असम्भव कार्य को सम्भव बनाया जा सकता है, लेकिन दुख है कि इस समय आप मे से कोई भी इस मार्ग पर नही चल सकता। ब्रम्हाजी की बात सुनकर देवराज इन्द्रदेव चिंतित हो गये। वे बोले फिर क्या होगा? ब्रम्हाजी ने उन्हे कहा आप लोग महान तपस्वी संत दधिची से मिले, उन्होने तपस्या और साधना के बल पर अपने अंदर असीमित शक्तियां जुटा ली है। यदि उनकी अस्थियों से बने अस्त्रों का प्रयोग आप लोग युद्ध मे करें तो असुर निश्चित ही परास्त होंगे। यह बात सुनकर देवराज इन्द्रदेव महान महर्षि दधिची के पास गये और अपनी चिंता के बारे मे बताया। महर्षि दधिची ने कहा कि देवराज इन्द्र संसार मे शांति एवं धर्म की स्थापना के लिये मै अपने प्राण न्यौछावर कर देता हूं और मेरी अस्थियों से वज्र बनायें और असुरों का नाश करें। महर्षि दधिची ने ऐसा ही किया और बाद में देवताओं की असुरों पर विजय प्राप्त हुई।

चिकित्सा विज्ञान मे ऐसा कहा जाता है कि आपका पहला शिक्षक संरक्षित मानव शरीर (Cadaver) है, इसलिए हमें मरणोपरांत देह का दान चिकित्सा महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के लिए करना चाहिए जिससे वे शरीर रचना विज्ञान की प्रायोगिक कक्षाओं में मानव शरीर की सूक्ष्म एवं विविध संरचनाओं को समझ सकें और भविष्य में समाज के लिए एक अच्छें डॉक्टर बन कर समाज की सेवा कर सकें। इसके लिए मृत्यु से पूर्व आप अपना स्वघोषित देहदान फार्म भर सकते है और अपने परिजनों को बतावें कि आप चिकित्सा महाविद्यालय के लिए अपना शरीर दान करना चाहते है। इसके अलावा परिजन भी अपने प्रियजनों का मरणोपरांत चिकित्सा महाविद्यालयों मे देहदान कर सकते है। शरीर रचना विज्ञान विभाग में मरणोपरांत प्राप्त देह को विभिन्न प्रकार के रासायनिक मिश्रणों के द्वारा परिरक्षित किया जाता है फिर उस शरीर पर एंम.बी.बी.एस. प्रथम वर्ष के छात्र अध्ययन करते है। छात्रों को प्रथम कक्षा मे ही केडेवरिक ओथ (Cadaveric Oath) दिलाई जाती है। जिसमें वह ओथ (Oath) लेते है कि संरक्षित शरीर का सम्मान करेंगे।

संरक्षित मानव शरीर (Cadaver) को शरीर रचना विज्ञान विभाग में मान सम्मान के साथ रखा जाता है। शरीर के प्रत्येक अंग का छात्र–छात्राओं द्वारा अध्ययन के लिये उपयोग किया जाता है। उसके बाद बचे हुए अंगो के स्पेसिमेन बनाये जाते है, जो कि वर्षो तक संरक्षित कर के रखे जाते है, उससे भी छात्रों को प्रायोगिक कक्षाओं मे पढाया जाता है। आज के तकनिकी युग मे वर्चुअल डिस्सेक्शन टेबल भी उपलब्ध है लेकिन संरक्षित मानव शरीर (Cadaver) का कोई सानी नही है, क्योकि दुनियां की सबसे कठिन अनसुलझी हुई संरचना मानव शरीर है, जिसमें बहुत सारी ऐसी विभिन्नताऐं होती है जो कि छात्र–छात्राऐं संरक्षित मानव शरीर (Cadaver) पर ही सीख सकते है।

इसलिए हमें यह जानना जरूरी है कि जिस प्रकार हम नेत्र दान, रक्त दान और अंग दान करते है उसी प्रकार हमें देहदान भी करना चाहिए, क्योकि यह समाज के हित में अद्वितीय कार्य है, जैसा कि महर्षि दधिची ने किया था।

डॉ0 अंकित जैन
विभागाध्यक्ष एवं सह–प्राध्यापक
शरीर रचना विभाग
शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय
सतना (म0प्र0)